Think
IAS...

दृष्टि
The Vision

Think
Drishti

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

निबंध

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UKM06

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

निबंध

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

UKPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे?	**5-33**
1.1 निबंध क्या है?	5
1.2 निबंध लिखने की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियाँ	9
1.3 निबंध लेखन से जुड़े अन्य सुझाव	28
2. निबंधों का संग्रह (लगभग 500 शब्द सीमा)	**34-56**
2.1 उत्तराखंड की लोक संस्कृति	34
2.2 देवभूमि उत्तराखंड का प्राकृतिक सौंदर्य	35
2.3 उत्तराखंड का साहित्य	36
2.4 उत्तराखंड में महिलाओं की सामाजिक स्थिति	38
2.5 देवभूमि उत्तराखंड का सांस्कृतिक महत्त्व	40
2.6 उत्तराखंड के विकास में वन संपदा का महत्त्व	41
2.7 उत्तराखंड का लोक साहित्य	43
2.8 महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से उत्तराखंड की चुनौतियाँ	44
2.9 उत्तराखंड की लोक कलाएँ	46
2.10 उत्तराखंड में सामाजिक संरचना	47
2.11 पर्वतीय राज्य उत्तराखंड का ऐतिहासिक परिदृश्य	48
2.12 उत्तराखंड का आर्थिक परिदृश्य	49
2.13 उत्तराखंड की भौगोलिक संरचना से पर्यटन का लाभ	51
2.14 देवभूमि उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाएँ व उनका निवारण	52
2.15 उत्तराखंड के विकास में महिलाओं का योगदान	53
2.16 देवभूमि उत्तराखंड और महिला सशक्तीकरण	55
3. निबंधों का संग्रह (लगभग 700 शब्द सीमा)	**57-118**
3.1 भारत की विदेश नीति का वर्तमान परिदृश्य	57
3.2 संचार क्रांति	58
3.3 शहरीकरण एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ	59
3.4 आतंकवाद की समस्या एवं समाधान	60
3.5 मानवधिकार के संरक्षण में भारत की भूमिका	61
3.6 भारतीय अर्थव्यवस्था विकास की ओर उन्मुख है	62
3.7 भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम: चुनौतियाँ और संभावनाएँ	63
3.8 विश्व में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	64
3.9 भारतीय लोकतंत्र का वर्तमान परिदृश्य	65
3.10 संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अंतर्राष्ट्रीय शांति	67

3.11 भ्रष्टाचार : चुनौतियाँ एवं समाधान 69
3.12 सौर ऊर्जा : भविष्य की ऊर्जा के रूप में 70
3.13 सोशल मीडिया का दुरुपयोग और आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ 72
3.14 वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव 73
3.15 लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका 75
3.16 नक्सलवाद : एक विचारधारा या चुनौती? 77
3.17 देश को बेहतर आपदा प्रबंधन की आवश्यकता 80
3.18 भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति 82
3.19 सहकारी संघवाद: मिथक अथवा यथार्थ 83
3.20 भारत में पर्यटन उद्योग 85
3.21 साइबर स्पेस और इंटरनेट : वरदान या अभिशाप 86
3.22 भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था 87
3.23 ग्रीन इंडिया बनाम डिजिटल इंडिया 89
3.24 भारत में नगरीकरण 90
3.25 संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन की आवश्यकता 92
3.26 इंटरनेट पर निजता की सुरक्षा 94
3.27 भारत में संघ और राज्यों के बीच राजकोषीय संबंध 95
3.28 गुटनिरपेक्ष आंदोलन (नाम) की प्रासंगिकता 97
3.29 सोशल मीडिया का औचित्य एवं प्रभाव 99
3.30 अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भारत की संभावनाएँ 100
3.31 अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की असीम संभावनाएँ 102
3.32 भारतीय न्याय व्यवस्था की समस्या 104
3.33 क्या तकनीक हमारी रचनात्मकता को खत्म कर रही है? 105
3.34 भीड़तंत्र का न्याय: व्यवस्था की असफलता 107
3.35 जीएसटी: एक देश-एक तंत्र 109
3.36 भारत-चीन मैत्री: वर्तमान परिदृश्य 110
3.37 देश में उच्च आर्थिक संवृद्धि और संसाधनों का असमान वितरण 111
3.38 उपभोक्तावाद की संस्कृति 113
3.39 महिलाओं के संवैधानिक अधिकार 115
3.40 आरक्षण : उचित या अनुचित 116

अध्याय
1

निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे?

निबंध लिखना विद्यार्थी जीवन की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। पढ़ाई चाहे विद्यालय स्तर की हो, कॉलेज के स्तर की या प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर की, निबंध लेखन की चुनौती विद्यार्थियों के सामने बनी ही रहती है। कई विद्यार्थियों के मन में यह सहज सवाल उठता है कि आखिर उनसे निबंध क्यों लिखवाया जाता है? निबंध को पढ़कर कोई उनके मानसिक स्तर या व्यक्तित्व का मूल्यांकन कैसे कर सकता है? और अगर कर सकता है, तो उन्हें एक बेहतरीन निबंध कैसे लिखना चाहिये?

इस लेख के माध्यम से हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश करेंगे। विश्वास रखिये कि निबंध लेखन की कला कोई जन्मजात कला नहीं है, इसे कठोर अभ्यास से निश्चित तौर पर साधा जा सकता है। अगर आप भी ठान लेंगे कि आपको प्रभावशाली निबंध-लेखक बनना है तो एक-दो महीनों के निरंतर और रणनीतिक अभ्यास से आप निश्चय ही इस सपने को साकार कर लेंगे।

1.1 निबंध क्या है?

सबसे पहले हम यही समझने की कोशिश करते हैं कि एक विधा (Genre) के रूप में निबंध क्या है और यह अन्य विधाओं से कैसे अलग है? 'विधा' (Genre) शब्द शायद आपको नया लग रहा होगा। इसका अर्थ साहित्य, संगीत या कला की विशेष शैलियों से होता है। उदाहरण के लिये, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेख और समीक्षा विभिन्न विधाओं के उदाहरण हैं। किसी विधा में उतरने से पहले बेहतर होता है कि उसके चरित्र को ठीक से समझ लिया जाए। मुझे विश्वास है कि अगर आपको निबंध विधा की ठीक समझ होगी तो निबंध लेखन की प्रक्रिया में आप अपना सतत् मूल्यांकन भी कर सकेंगे और प्रभावशाली निबंध भी लिख सकेंगे।

कुछ लोग मानते हैं कि निबंध एक प्राचीन भारतीय विधा है जिसका मूल संस्कृत साहित्य में खोजा जा सकता है। यह बात सही है कि संस्कृत में 'निबंध' नाम की एक विधा मौजूद थी जिसमें धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की विवेचना की जाती थी। इस विधा में लेखक पहले अपने से विरोधी सिद्धांतों को चुनौती के तौर पर पेश करता था और फिर एक-एक करके अपने तर्कों, प्रमाणों की मदद से उन सभी सिद्धांतों को ध्वस्त करता था। चूँकि इस विधा में प्रमाणों का 'निबंधन' किया जाता था, इसीलिये इसका नाम 'निबंध' पड़ गया था।

सवाल यह है कि आज हम जिसे निबंध कहते हैं, वह यही विधा है या उससे अलग? इसका सामान्यत: प्रचलित उत्तर है कि आज का निबंध अपने चरित्र और स्वरूप में संस्कृत के 'निबंध' पर नहीं बल्कि अंग्रेज़ी के 'Essay' पर आधारित है। अत: निबंध विधा को समझने के लिये हमें आधुनिक यूरोपीय साहित्य की पृष्ठभूमि का अनुसंधान करना चाहिये।

माना जाता है कि एक आधुनिक विधा के रूप में 'निबंध' की शुरुआत 1580 ई. में फ्राँस के लेखक मॉन्तेन (Montaigne) के हाथों हुई। मॉन्तेन ने अपने निबंधों के लिये 'ऐसे' (Essay) शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ होता है- 'प्रयोग'। उस समय फ्राँस में कहानी, नाटक, कविता जैसी कई विधाएँ प्रचलित थीं पर निबंध का कलेवर उन सबसे अलग था। इसमें कहानियों की तरह न तो विभिन्न चरित्र/पात्र थे और न ही घटनाएँ थीं। नाटक में कहानी के साथ-साथ दृश्य और मंच की भी बड़ी भूमिका होती है, पर निबंध में यह सब भी नहीं था। अगर कविताओं से तुलना करें तो उनमें छंद, तुक और लय जैसे ढाँचे उपस्थित होते हैं जो रचनाकार को एक बुनियादी फ्रेमवर्क उपलब्ध करा देते हैं; पर निबंध में ये भी नहीं थे क्योंकि निबंध पद्य (Poetry) में नहीं, गद्य (Prose) में था।

स्पष्ट है कि निबंध इन सभी विधाओं से अलग था। एक अर्थ में यह सबसे कठिन विधा के रूप में उभरा क्योंकि इसमें पाठक को बांधकर रखना सबसे मुश्किल काम था। यह मुश्किल इसलिये था क्योंकि इसमें मनोरंजन पैदा करने के लिये न घटनाएँ थीं और न ही कहानियाँ। इसमें सिर्फ 'विचार' या 'भाव' थे जो बिना किसी ओट या माध्यम के सीधे ही

अध्याय 2

निबंधों का संग्रह (लगभग 500 शब्द सीमा)

इस अध्याय के अंतर्गत विगत वर्षों में उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की राज्यसेवा की मुख्य परीक्षा के प्रथम प्रश्नपत्र में 'निबंध लेखन' में पूछे गए लगभग 500 शब्द सीमा के निबंध लेखन की प्रवृत्ति को समझते हुए विगत वर्षों के हल तथा संभावित महत्त्वपूर्ण निबंधों को देने का प्रयास किया गया है। इसमें आयोग द्वारा निर्धारित किए गए विषयों पर निबंधों को शामिल किया गया है:-

- उत्तराखंड की सामाजिक संरचना, इतिहास, संस्कृति एवं कला
- उत्तराखंड का आर्थिक एवं भौगोलिक परिदृश्य एवं पर्यावरण
- उत्तराखंड का साहित्य
- उत्तराखंड में महिला सशक्तीकरण: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

इन विषयों पर आधारित कुल निबंधों को इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है जो आगामी परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को निबंध लेखन करने में सहायक होंगे।

2.1 उत्तराखंड की लोक संस्कृति

संस्कृति समाज और जीवन के विकास के मूल्यों की सम्यक् संरचना है। यह समाज में अंतर्निहित गुणों और उच्चतम आदर्शों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। किसी राज्य की लोक संस्कृति और वहाँ के स्थानीय निवासियों के बीच एक अटूट संबंध होता है। महान हिमालय पर्वत की अद्वितीय सुंदरता, आध्यात्मिक पवित्रता और प्राकृतिक विविधता उत्तराखंड की लोक संस्कृति में नवीन आयाम जोड़ देते हैं। उत्तराखंड की संस्कृति में भू-विविधता, भाषायी विभिन्नता, रंग-बिरंगी कलाएँ, खान-पान आदि में अनेक विविधताएँ दिखाई देती हैं।

"हमारी संस्कृति ने
पेड़-पौधों, नदी-पहाड़ों
पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं
कीट-पतंगों, ऋतुओं
सबको दिया है आदर-सम्मान।"

उत्तराखंड की लोक संस्कृति मुख्य रूप से हिमालय पर्वत और धर्म से जुड़ी हुई है। यहाँ के खान-पान, संगीत, नृत्य एवं लोक कलाओं पर हिमालयी भौगोलिक विशेषताओं का प्रभाव दिखता है। उत्तराखंड की लोक संस्कृति में मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाली कई नृत्य शैलियाँ प्रचलित हैं। 'लंगविर' उत्तराखंड की एक पुरुष नृत्य शैली है जो शारीरिक व्यायाम से अभिप्रेरित है। वहीं 'बराड़ा' लोक नृत्य कुछ विशेष धार्मिक त्यौहारों पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त झुमैला, चौफुला, चांचरी, छोलिया आदि यहाँ के प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं। संगीत-गायन भी उत्तराखंड की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। 'बेडू पाको' उत्तराखंड का एक प्राचीन अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त लोकगीत है। मंगल, बसंती, खुदेड़ आदि यहाँ के सर्वाधिक लोकप्रिय लोकगीत हैं। उत्तराखंड में सुंदर चित्रकारी, भित्तिचित्र, लोककला चित्र आदि भी प्रचलित हैं जो मंदिरों और घरों को सजाने के लिये प्रयुक्त की जाती हैं। यहाँ की पहाड़ी या काँगड़ा चित्रशैली विश्वप्रसिद्ध है। इसका विकास 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य उत्तराखंड में हुआ। काँगड़ा चित्रकला की गढ़वाली शैली प्रकृति से अपनी निकटता के लिये जानी जाती है जबकि कुमाउँनी शैली अपनी ज्यामितीय प्रकार की संरचनाओं के लिये प्रसिद्ध है। ऊनी शॉल, स्वेटर, स्कॉर्फ, सोने के आभूषण, गढ़वाली टोकनी, दस्तकारी, कढ़ाई, लकड़ी पर नक्काशी आदि उत्तराखंड के महत्त्वपूर्ण हस्तशिल्प हैं।

अध्याय
3

निबंधों का संग्रह
(लगभग 700 शब्द सीमा)

इस अध्याय के अंतर्गत विगत वर्षों में उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की राज्य सेवा की मुख्य परीक्षा के प्रथम प्रश्न पत्र में 'निबंध लेखन' में पूछे गए लगभग 700 शब्द सीमा में निबंध लेखन की प्रकृति को समझते हुए विगत वर्षों के हल तथा संभावित महत्त्वपूर्ण निबंधों को स्थान देने का प्रयास किया गया है। इसमें आयोग द्वारा निर्धारित किये गए निम्नलिखित विषयों पर निबंधों को शामिल किया गया है-

- भारतीय अर्थव्यवस्था एवं राज व्यवस्था
- विज्ञान एवं तकनीक
- आपदा एवं जन स्वास्थ्य प्रबंधन
- समसामयिक घटनाचक्र
- विश्व, सुरक्षा, मानवाधिकार और भारत

इन विषयों पर आधारित कुल 40 निबंधों को इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है, जो आगामी परीक्षाओं में अभ्यर्थियों के लिये निबंध लेखन में सहायक होंगे।

3.1 भारत की विदेश नीति का वर्तमान परिदृश्य

भारतीय विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों के आलोक में गत्यात्मक प्रवृत्तियों को धारण करती रही है। 'गुटनिरपेक्षता' और पंचशील के मूल सिद्धांतों पर जिस स्वतंत्र विदेश नीति की स्थापना की गई उसे केंद्र में रखकर आवश्यक और अनिवार्य परिवर्तनों को भी इसमें पर्याप्त स्थान दिया जाता रहा है। गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत शीतयुद्ध के पश्चात् विश्व में पुनर्परिभाषित हो गया और भारतीय विदेश नीति में इस चुनौती के अनुकूल परिवर्तन करने के प्रयास किये जाते रहे हैं।

वर्तमान में भारतीय विदेश नीति अपने मूल सिद्धांतों की निरंतरता को बनाए हुए है तथापि इसके विविध आयामों में परिवर्तन देखे जा सकते हैं। विदेश नीति में सबसे अधिक महत्त्व पड़ोसी प्रथम की नीति को प्रदान किया जा रहा है। यही कारण है कि 2014 में प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में सभी पड़ोसी देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया गया। वहीं पड़ोसी देशों को सार्क उपग्रह का लाभ नि:शुल्क उपलब्ध कराना भी इसी दिशा में एक कदम है।

वर्तमान सरकार द्वारा विदेश नीति का निर्धारण करते समय महाशक्तियों के साथ संतुलन साधते हुए अमेरिका को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके साथ ही वैश्विक स्तर पर भारत की प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने के उद्देश्य से विभिन्न देशों के दौरे प्रधानमंत्री द्वारा किये जा रहे हैं। इसका उद्देश्य द्विपक्षीय एवं बहुपक्षी संबंधों को नई दिशा देना है। आतंकवाद के मुद्दे पर सरकार ने कड़ा रुख अपनाते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि सीमा पार आतंकवाद और वार्ता दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक जनमत तैयार करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी बात प्रभावी ढंग से रखने के भी प्रयास किये गए हैं। वहीं आतंकवाद के किसी भी स्वरूप के साथ असमझौतावादी रुख स्पष्ट करने के उद्देश्य से सर्जिकल स्ट्राइक जैसी गतिविधियों को भी प्रत्यक्ष रूप से अपनाया गया।

विदेश नीति का मौलिक चरित्र बरकरार रखते हुए वर्तमान सरकार द्वारा लुक ईस्ट पॉलिसी को समर्थन एवं प्रोत्साहन दिया जा रहा है तथा इससे आगे बढ़कर एक्ट ईस्ट पॉलिसी को अपनाया गया है। दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापारिक एवं सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ-साथ चीन, रूस एवं अमेरिका जैसी तीन महाशक्तियों के साथ संबंधों को एक साथ संतुलित करने की भी सफल कोशिश की जा रही है।

विदेश नीति में एक महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में भारतीय डायस्पोरा की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया जा रहा है। प्रतिभा पलायन की समस्या से निपटने के लिये विदेशों में निवास करने वाले भारतीयों से संपर्क स्थापित कर उन्हें भावनात्मक रूप से भारत से जोड़कर देश के विकास में सहयोगी बनने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। विदेश मंत्रालय त्वरित कार्यवाही

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456